शब्द–ब्रह्म
E - ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

इक्कीसवीं सदी के बाल साहित्य में कविता लेखन

डॉ.सोनाली निनामा
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

विज्ञान और तकनीक के विकास ने बाल मन की कल्पना को नए आयाम दिए हैं । पहले जहां बाल कविताओं में परियों और देवताओं-दानवों का चित्रण किया जाता था, वहीं अब कवि विज्ञानसम्मत तर्क आधारति बाल कवितायें लिखने में प्रवृत्त हुए हैं। वैज्ञानिक सत्य को कविताओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया जा रहा है । बाल मन की प्रेरणा के बिंदु बदल गए हैं। इसे ध्यान में रखते हुए आज की बाल कविता लिखी जा रही है। प्रस्तुत शोध पत्र में इक्कीसवीं सदी की बाल कविता पर विचार किया गया है

प्रस्तावना

इक्कीसवीं सदी के प्रारम्भ में बाल कविता के क्षेत्र में विविध विषयों के साथ नई संभावनाओं , नए आयामों को छूने की को शिश की गई है। बाल कवियों ने कविताओं के माध्यम से बच्चों को नवीनता से जोडा है। चंद्रमुखी प्रकाशन द्वारा 2001 में घमंडीलाल अग्रवाल का बाल काव्य संग्रह 'बाल कविताजंलि ' का प्रका शन हुआ है , जिसमें 101 बाल कविताएँ संकलित की गई हैं। संग्रह की प्रमुख कविताओं में गणतंत्र हमारा, नए साल में, पुस्तक, सूरज बनकर चमको, शरीर के अंग, मेहनत, अप्रैल फूल , वोट उसी को देंगे , कब्ड्डी, दशहरा, आओ सीखें आदि बेहद लोकप्रिय और महत्वपूर्ण हैं। सन 2002 में प्रकाशित 'हम भारत के बच्चे ' शकुन्तला कालरा कृत 'टीचर पीछे आगे बच्चे ', इंदिरा परमार की 'समय के साथ', कमलेश द्विवेदी कृत 'मैं पापा बन जाऊँ', यश मालवीय की 'रेनी डे भई रेनी डे ', श्यामसुन्दर श्रीवास्तव द्वारा लिखित 'नए वर्ष का संकल्प', जाकिर अली रजनीश की 'जरा सा प्यार' प्रमुख है। मधु भारतीय का बाल काव्य संग्रह 'मेरा देश महान'का प्रकाशन हुआ। अर्चना साहित्य परिषद के माध्यम से जगन्नाथ वर्मा के संपादकत्व में बच्चों के लिए कवि ताएँ (2003) प्रकाशित हुई जिसमें प्रमुख रूप से ओमप्रका श जयंत की 'त्याग', अनिल किशोर शुक्ल की 'टॉमी कुत्ता', डॉ..कनकलता तिवारी कृत 'ओले' तथा 'मैं तो चन्दा लूंगा', डॉ..गणेश नारायण कृत 'चन्दा मामा लडे चुनाव ' बाल कवि ताएँ बच्चों को आनन्द की अनुभूति कराती है।

इस प्रकार 21वीं सदी की बाल कविता प्रगति के साथ विविध विषयों से समृद्ध होती रहती है। महेश सक्सेना का कविता संग्रह 'आओ जाने सडक के नियम ' 2004, राकेश चक्र 'एक सौ इक्यावन बाल कवि ताएँ' (2005) महत्वपूर्ण कविता संग्रह हैं। इसमें 'जीवन में विज्ञान ', 'स्वस्थ रहने के नुस्खे', 'टी.वी. और बचपन ', 'पहला पानी , 'देश चन्दा कहता है ', 'हमारा भूगोल', 'गीता का संदेश', 'खूब हँसते मोटे लाल', 'राम ने धनुष उठाया ', 'भारत माँ की चाह ',

शब्द–ब्रह्म
E - ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'दीवाली के दीप', 'राष्ट्रीय एकता', 'बचपन', 'वीर शिवाजी' आदि बाल कविताओं ने बालकों को आकृष्ट करते हुए बाल कविता को समृद्ध किया। अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे' का बाल कविता संग्रह 'काना बाती कुर्र ' में मेरा बेटा हीरा है , 'झण्डा', 'लीची', 'मीठे बोल ' आदि प्रभा वी रच नाएँ हैं। राष्ट्रबंधु कृत 'यह धरती है बलिदान की ' 2006 संग्रह की कविताओं में पंजाब , हरियाण, प्रयाग, कोलकाता, कश्मीर, कन्याकुमारी आदि प्रदेशों की कविता रची गई है। अशोक गीते का काव्य संग्रह 'तितली रानी' 2006 में सामाजिक सरोकारों की कविताएँ संकलित हैं।

2007 में म. प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिक भोपाल द्वारा प्रकाशित इन्दू पाराशर 'कविता में विज्ञान' बाल काव्य संग्रह विज्ञान के क्षेत्र में एक अभिनव प्रयोग हुआ है। इस काव्य संग्रह में वैज्ञानिक ज्ञान व सिद्धांतों को बडे ही रूचिकर ढंग से प्रस्तुत किया है। संग्रह की प्रमुख कविताओं में 'हमारे 'दांत', 'हमारे कान', 'हमारा भोजन', 'साफ सुथरा परिवेश', 'सजीव-निर्जीव', पेडों को देखना', 'दिन रात का होना', 'बिन पानी सब सून' आदि कविताओं की पारिभाषिक शब्दावली को दोनों भाषाओं में दिया गया है। सन 2008 में डॉ.. परशुराम शुक्ल का बाल काव्य संग्रह 'मंगल ग्रह जायेंगे' में नैतिक, वैज्ञानिक एवं मनोरंजन बाल कविताएँ संकलित हैं। राके श चक्र का शिक्षाप्रद बाल काव्य-संग्रह 'लट्टू सी ये धरती घूमे' डॉ..राज गोस्वामी का चंद्रयान से जायेंगे' प्रतिभा अस्थाना की 'नई राहें', जयप्रकाश भारती कृत 'नई सदी में हम' आदि बाल कविताओं में नए बिम्ब एवं प्रतीकों के साथ विज्ञान के नए विषय भी जुडे हैं।

बाल कविता की भाव भूमि

बाल कविता अपनी भावभूमि की विविधता के अनुरूप ही शैली-शिल्पगत वैविध्य से परिपूर्ण है। डॉ. रोहिताश्व अस्थाना की कविता 'हम वैज्ञानिक युग के बच्चे' में बालकों के बदलते हुए भावबोध की सहज अभिव्यक्ति देखिए-

परिकथाएं हमें न भाती,
भूत प्रेत-बाधा भरमाती।
हम वैज्ञानिक युग के बच्चे,
है विज्ञान हमारी थाती।
हमने तो रोबोट और कम्प्यूटर,
को है साथी माना।
ऐसी होवे कथा-कहानी
जो तथ्यों पर जाएँ मानी।
नई सभ्यता, नई प्रगति,
जिनसे होवे नई खानी।1

'संविधान बच्चों का' रमेशचंद्र जी की मंचीय खेल पर आधारित कविता है। इसमें बच्चों की दुनिया, बच्चों का मानसिक संसार , बाल विकास की घोषणाएं आदि को सम्मिलित किया गया है। बच्चों में खुद कुछ कर गुजरने की चेतना आई है। गंभीर चिंतन के बाद बच्चों के बाल नेता छुट्टन जी कहते हैं-

हमको भी अधिकार चाहिए,
बाल वर्ग अब है चेता।
आज हमारी दुनिया का है,
हर नन्हा मुन्ना नेता।
मम्मी का पापा का प्यार चाहिए,
सबको पूरा ही आहार चाहिए।
सब भइया बहनों का स्नेह चाहिए,
अब सहानुभूति का गेह चाहिए।
सभी स्वस्थ्य-सुविधाएं हमको मिल सकें,
शुल्क रहित शिक्षा-दीक्षाएं फल सकें।
खेलों के मनोरंजन के अवसर हो,
मैदानों में, नाट्य गृहों के परिसर हो। 2

बाल कवि चित्रांश वाघमारे का काव्य संग्रह 'माँ' जीवन मूल्य, सामाजिक सरोकार, राष्ट्रीयता और

शब्द–ब्रह्म
E - ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

जिन्दगी की तमाम विषमताओं से परिचित कराता है। इस संग्रह की रचनाओं में बचपन की चंचलता के साथ ही गंभीर विषयों पर चिंतन भी दृष्टव्य है। 'संसद' कविता की पंक्तियों में 'निठारी हत्याकाण्ड' के सच को उजागर किया है-

कैसी बोली बोल रहे, संसद के ये बिचोलिए,
इसको बांधों उसको पकडो , यू लूट खसोट छोडिये।
आदमी का खून पी रहा हो, जब ये आदमी,
काल के कपाल से दुर्गन्ध मत निचोडिए।
घूंट पी के रह गया मैं, खून का यूं साथियों,
मर चुके को मारकर, वो खा गया है सोचिए।
ये हत्या हुई या न्याय हुआ,
निठारी को ही सोचिए, निठारी को विचारिए। 3

अश्विनी कुमार पाठक द्वारा लिखित 'अजन्मी बेटी' कन्या भ्रूण हत्या तथा लडके-लडकी में असमान व्यवहार पर तीखा प्रहार है-

उदर-कुक्षी से बोल रही है,
एक अजन्मी बेटी-
माँ मेरी विनती सुन लेना,
बस तू लेटी लेटी।
नहीं चाहते पापा, देखूं
मैं यह सुन्दर दुनिया।
मत अस्तित्व मिटा तू मेरा,
माँ मुझको आने दे।
बेटा और बेटी में अन्तर,
यह दुनिया क्यों करती ?
अगर न बेटी हुई, बचेगी
फिर कैसे यह धरती ? 4

डॉ.शेरजंग गर्ग की 'तीनों बंदर महाधुर न्धर' चिंतन प्रधान कविता है। ये तीनों बंदर गांधीजी जी के बन्दर हैं, लेकिन नए जमाने की सच्चाइयों ने इन्हें काफी बदल दिया है। वे मान गए हैं कि बुरा न देखने से बुराई का अंत नहीं होगा बल्कि उसके कारणें की विश्लेषण करने पर ही उसे मिटाया जा सकेगा-

गांधीजी के तीनों बंदर
पहुंचे चिडियाघर के अन्दर।
देख रहा रंगीन करिश्मा,
अच्छाई कम अधिक बुराई।
खूब हुआ दुष्टों से परिचय
मन ही मन कर बैठा निश्चय।
दुष्टजनों से सदा लडेगा,
इस चश्मे से रोज पढेगा।

पहले की तरह दूसरा और तीसरा बन्दर भी काफी बदल गया है अब वे चुप रहने वाले बन्दर नहीं है नेकी और बदी में फर्क करके नेकी के साथ रहना सीख रहे हैं-

आया नया जमाना आया,
नया तरीका सबको भाया।
तीनों बन्दर बदल गए हैं,
तीनों बन्दर संभल गए हैं। 5

आज की मंहगी शिक्षा ने बच्चों के बस्तों का बोझ भी बढ़ा दिया है। इस बोझ के तले उनका बचपन मुरझा रहा है। इस समस्या को डॉ..श्यामलाकांत वर्मा ने हास्य-व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है-

सारा घर भर हँसता,
इतना भारी बस्ता।
कैसे कटता रस्ता,
करता हालत खस्ता।
हम सब चुप है सहते,
शिक्षक जी है कहते।
अपना बोझ ढोना,
क्यों हो रोना धोना।
यह मजबूत बनाता,
श्रम से जुड़ता नाता। 6

शब्द–ब्रह्म
E - ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

रमेशचंद्र पंत की 'जीवन की रेल' कविता महंगी शिक्षा का रूप दिखलाती है-

महँगी शिक्षा महँगे खेल,
सभी ओर ही ठेलम-ठेल।
खाली पेट बीतती रात,
हम सबकी किस्मत में यह सब।
यह कैसी दुनिया,
शिक्षा भी पैसों का खेल।7

इस तरह रमेशचंद्र पंत की '101 बाल कविताएँ' संग्रह की सभी कविताएँ नवीनता, रोचकता के साथ आनन्द की अनुभूति देती है। आधुनिक युग में कम्प्यूटर का महत्त्व बढ गया है। 'कम्प्यूटर जी' शीर्षक कविता में बाल मनोवृत्ति का चित्र अंकित है-

सभी ओर ही आज आपके,
चर्चे है कम्प्यूटर जी।
जांच रहे हैं आप हमारी,
कापी तक कम्प्यूटर जी।
चला करेंगे हुक्म आपके,
लगता है कम्प्यूटर जी
बन बैठे है सुपरमैन अब,
आप यहाँ कम्प्यूटर जी।8

'लडते हैं ये लोग ' शीर्षक कविता में बच्चों को बड़ों से शिकायत हैं -

कोई कहता मंदिर मेरा,
तो कहते मस्जिद कुछ लोग।
कोई हिन्दू कोई मुस्लिम,
सिक्ख, ईसाई तो कुछ लोग।
कब समझेंगे मम्मी! ये सब,
महज आदमी खुद को लोग। 9

डॉ. राज गोस्वामी के काव्य संग्रह 'चंद्रयान से जाएंगे' में बच्चों की अनोखी कल्पनाओं का वर्णन है। 'खोया आज समाज' कविता में नवीनता की झलक मिलती है-

टेलीफोन और ट्रांजिस्टर,
डेड हुए हैं आज।
टी. वी. और मोबाइल में,
खोया आज समाज।10

श्रीमती प्रतिभा अस्थाना कृत 'नई राहें' संग्रह में नई शताब्दी की विशेष उपलब्धियों के साथ अनुसंधान खोजों को बाल कविता का विषय बनाया है। 'हवाई जहाज' कविता की पंक्तियाँ हैं-

आदि युगों में भारत ने भी,
बनाए थे पुष्पक विमान।
विलासित के गर्त में डूबे,
तब भूले सब ज्ञान विज्ञान।
बने अनेक देशों में हवाई जहाज,
नई साज सज्जा के साथ।
भारत में भी अब बनते हैं,
बंगलौर में हवाई जहाज। 11

प्रतिमा अस्थाना कृत 'नई राहें' संग्रह की कविता 'अंतरिक्ष में भारत' की उपलब्धियों को दर्शाती है। 21वीं सदी में भारत भी विकास शील देशों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका रखता है-

वैज्ञानिक इस देश के समर्पित रहते निरन्तर,
उनके प्रयोगों के प्रतिफल आने लगे बराबर।
मौसम का ज्ञान रिमोट सेन्सिंग वन ए ने दिया,
इन्सेट थ्री बी ने किया संचार में जलवा। 12

पुरस्कृत बाल कविता संग्रह 'नई सदी में हम ' बाल कवियों द्वारा लिखित रचनाओं का संकलन है। 'लोकतंत्र की गरिमा ' शीर्षक कविता की पंक्तियां भारत को विश्व विजेता का ताज पहनाती है-

विश्व-शान्ति में आगे भारत,
आर्थिक उन्नति में आगे भारत।
खेल जगत में आगे भारत,
सदाचार में आगे भारत।
उज्जवल भविष्य से दमकता भारत,

शब्द–ब्रह्म
E - ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

आधुनिकता से चमकता भारत।13

'बाईं और सडक के चलना ' बाल कविता बच्चों को यातायात के नियमों की जानकारी देती हैं-

सड़क बनी है काली-काली,
मोटर दौडे बस और ट्राली।
बाईं और सड़क के चलना,
आओ मेघा और रूपाली।
अनुशासित यदि जीवन होगी,
खूब मनेगी रोज दीवाली।14

मुख्तार अहमद अंसारी की कविता 'बापू तुम आ जाओ न' आज के समय की एक कठोर सच्चाई को व्यक्त करती है। भ्रष्टाचार की इस दुनिया में बच्चे फिर से 'बापू' का आह्वान करते हुए उन्हें बुलाते हैं-

हो रहा पतन अहिंसा का,
बढ़ रहा देश में भ्रष्टाचार।
न्याय की स्थिति डांवा डोल,
फैला जाता है व्यभिचार।
फिर से राह दिखाओ ना,
बापू तुम आ जाओ ना।15

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते हैं कि बाल कविताओं में आज के बच्चों का संपूर्ण संसार , उनकी लालसायें, महत्वाकांक्षाएं, समस्याएं और सुन्दर कल्पनाएँ अभिव्यक्त हुई हैं। बाल कविता को विस्तृत फलक प्रदान करने में बाल कवियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है उनकी कवि ताएँ मनोविज्ञान के साथ-साथ आज के युग से परिचित कराती है वहीं बच्चे भी इससे अछूते नहीं हैं वे भी कविताओं में अपने मन की अभिव्यक्ति पाते हैं और उन्हें पूरे प्रयास के साथ अपनाते हुए दिखाई देते है। इसीलिए हम बाल कविता के महत्व को नकार नहीं सकते है।

बाल कविता को समृद्ध बनाने में इंदिरा गौड , कृष्णवल्लभ पौराणिक, राजनारायण चौधरी, रमेश कौशिक, बालस्वरूप राही, अभिरंजन कुमार, ध्रुव शुक्ल, कन्हैयालाल मत्त, प्रयोग शुक्ल, अश्वघोष, विनय दुबे , राजेश जोशी, चन्द्रदत्त इंदु, सुरेश विमल, बाबूराम शर्मा 'विभाकर', देवेन्द्र कुमार , कृष्णवल्लभ, राजा चौरसिया, डॉ.वीरेन्द्र शर्मा, गोपीचन्द्र श्रीनागर , पूनम भट्ट , रेखा राजवंशीय, प्रतिभा पाण्डेय , पीयूष वर्मा , नीलिमा सिन्हा , पवन, करण आदि का महत्वपूर्ण योगदान है।

संदर्भ सूची

1. काव्य संग्रह - हम वैज्ञानिक युग के बच्चे , डॉ.. रोहिताश्व अस्थाना पृष्ठ 26
2. काव्य संग्रह - आओं गाएँ शाला में पढते-पढते, डॉ.. रमेशचद्र खरे पृष्ठ 51
3. काव्य संग्रह - माँ, चित्रांश वाघमारे पृष्ठ 4
4. काव्य संग्रह - तुम धरती के राजदुलारे , अश्विनी कुमार पाठक पृष्ठ 25
5. काव्य संग्रह - हिन्दी बाल कविता का इतिहास , डॉ.. प्रकाश मनु पृष्ठ. 370
6. काव्य संग्रह - रिमझिम , डॉ.. श्यामलाकांत वर्मा पृष्ठ 17
7. 101 बाल कविताएँ, रमेशचंद्र पंत पृष्ठ. 103
8. 101 बाल कविताएँ, रमेशचंद्र पंत पृष्ठ 57
9. 101 बाल कविताएँ, रमेशचंद्र पंत पृष्ठ 14
10. काव्य संग्रह - चन्द्रयान पर जाएंगे , डॉ. राजा गोस्वामी पृष्ठ 27
11. काव्य संग्रह - नई राहें, प्रतिमा अस्थाना पृष्ठ 29
12. काव्य संग्रह - नई राहें, प्रतिमा अस्थाना पृष्ठ 31
13. काव्य संग्रह - नई सदी में हम , सं. जयप्रकाश भारती पृष्ठ 24
14. काव्य संग्रह - 151 बाल कविताएँ, राकेश चक्र पृष्ठ 31
15. 151 बाल कविताएं , सं. जाकिर अली रजनी श पृष्ठ 15